International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 04-12-2018; Accepted: 07-01-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 1; January 2019; Page No. 34-35

भारतीय न्यायपालिका पर से लोगों का उठता विश्वास

Vikas Kumar
Research Scholar, Maharashtra National Law University, Nagpur, Maharashtra, India

सारांश
इस बात को स्वीकारना बहुत कठिन है की वर्षो से लोगों के विश्वास का केंद्र रही भारतीय न्यायपालिका अब लोगों का विश्वास खो रही है | लेकिन बदलते हालातों ने इस बात की गवाही दी है की यही सच है ये बात तो हम सभी जानते है की कोई भी संस्थान अगर लोगों का विश्वास खो दे तो उसका पतन निश्चित है | इसलिए यह जरुरी है की हम इस बात का अवलोकन करें की आखिर क्यों हमारी न्यायपालिका लोगों का विश्वास खो रही है | इसके पीछे की वजह क्या है | हाल ही के दिनों में सबरीमाला मंदिर, व्यभिचार, तीन तलाक तथा अन्य मुद्दों पर इसके द्वारा दिए गए निर्देशों, का क्या प्रभाव पड़ा है "क्या सरकार से खींचतान की लड़ाई या इसके अंदरूनी लड़ाई इसके लिए घातक हो रहें हैं ? आगे आने वाले समय में आयोध्या जैसे मामले इसकी परीक्षा लेने के लिए तैयार है | भारत एक ऐसा देश है जहाँ धर्म के नाम पर लोग कुछ भी करने के लिए तैयार रहते है यहाँ तक की विद्रोह भी, और पिछले कुछ दिनों से लोगों को यह लग रहा है की न्यायपालिका उनके धर्म को सम्मान नहीं कर रही है, इसलिए इस बात की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता की लोग न्यायपालिका के खिलाफ भी विद्रोह कर सकते है | इन्ही सब बातों को ध्यान में रख के अब भारतीय न्यायपालिका को साडी बातों का अवलोकन करके कदम बढ़ाने की जरूरत है | इस लेख के माध्यम से इन सभी कारणों को विस्तृत रूप से विश्लेषण किया गया है |

मूल शब्द : भारतीय न्यायपालिका, विश्वास |

प्रस्तावना

विश्वास -किसी संस्था या संगठन के लिए सबसे बुनियादी और महत्वर्पूण कारक है | इसके बिना किसी संस्था को खुद को बचाय रखना नामुमकिन है | अगर किसी संस्थान से लोगो का विश्वास उठने लगे तो उस संस्थान का पतन शुरू हो जाता है | लेकिन दुर्भाग्यवश इस बार यह संस्थान कोई और नहीं वर्षो से आम जनमानस की आशा की किरण भारतीय न्यायपालिका है | वर्षो से लोगो के विश्वास का मंदिर भारतीय न्यायपालिका अब अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है | लोगो का उस पर से उठता विश्वास आज उसके लिए सबसे बड़ी चुनौती है | यह इसके अस्तित्व का विषय है | यह पहली बार नहीं है जब लोग भारतीय न्यायपालिका पर संदेह कर रहे हैं लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि इस बार लोग न्यायपालिका को दोष देने या बदनाम करने में बहुत सहज हैं जो मुद्दे की गंभीरता को बताता है | हमें ये समझना होगा कि न्यायपालिका पर अविश्वास लोकतंत्र के नींव के हिलने जैसा हैं| अगर न्यायपालिका खतरे में हैं तो हमारा भविष्य, हमारे अधिकार, हमारा महान लोकतंत्र खतरे में हैं |

ऐसा नहीं है की ये स्तिथि अचानक से आ गयी है, काफी लम्बे दौर से न्यायपालिका इस दौर से गुजर रही है लेकिन पिछले कुछ वक्त से ये मुद्दा चिंताजनक होते जा रहा है | ऐसा किसी एक कारण की वजह से नहीं हो रहा है, बल्कि कई छोटे- बड़े कारण इसमें अपना योगदान दे रहे है | यह बात भारतीय न्यायपालिका की है इसलिए जरूरी है की उन कारणों पर ध्यान दिया जाय और उनको समझा जाय |

भारत के रूढ़िवादी समाज को न्यायपालिका द्वारा दिए गए अपरंपरागत फैसले को स्वीकार करने में समस्या हो रही है | लोग सब कुछ अपनी संस्कृति के साथ जोड़ते हैं और जब भी कुछ नया होता है या अपने पारंपरिक तरीके में बदलाव के लिए मजबूर करता है तो लोग इसे अपनी संस्कृति के विनाश के रूप में लेते हैं और इस वजह से लोगअसंतुष्ट हो जाते हैं और विरोध करना शुरू करते हैं | हाल के दिनों में समलैंगिकता, सब्रिमाला मंदिर और व्यभिचार पर निर्णय आग में घी का काम किया है |

भाषण की स्वतंत्रता और संचार के विभिन्न साधनों के कारण, लोग अपने विरोधऔर दृष्टिकोण को व्यक्त करने में अधिक सुविधाजनक हैं जो कई बार अपमानजनक भी होता हैं। कभी-कभी दर्शकों के सामने बनावटी तथा असत्य तथ्य देना लोगो के अंदर असंतोष के बीज बोने की तरह हैं। इस के माध्यम से कुछ समूह समाज के माहौल को प्रभावित करने और लोगों की भावनाओं को आहात कर खुद का फायदा खोजते हैं |और इन सब के वजह से लोगो के मन में न्यायपालिका के कार्यप्रणाली को ले कर संदेह होता हैं |

एकतरफा नकारात्मक प्रचार भी न्यायपालिका के लिए भारी साबित हो रहा है, जो लोग व्यस्था से पीड़ित है वो हर जगह इसका उल्लेख करते है, गली मुहल्ले से लेकर राष्ट्रीय मीडिया तक सभी जानते हैं लेकिन न्यायपालिका से लाभ प्राप्त करने वाले लोगों के बारे में अच्छी बात कभी भी समाचार में नहीं होती है, लोग न्यायिक व्यवस्था के लिए कभी भी धन्यवाद नहीं देते हैं, इस असमानता का असर लोगो के मनोव्याग्निक नकारात्मकता के रूप में दिखाई देती है. यह सिक्का के सिर्फ एक पहलु देखने जैसा है। इसकी वजह से लोगो की विस्वाश को चोट पहुंचती हैं |

जब न्यायपालिका से जुड़े समस्या पर बात हो रही हो तो कौन "तारीख पर तारीख ....." संवाद को भूल सकता है ? न्यायपालिका की सबसे बड़ी और पुरानी समस्या देर से मामलो का निपटारा है | कारण चाहे जो कोई भी हो लेकिन सचाई है की इसकी वजह से न्यायपालिका का अस्तित्व्य खतरे में हैं |लोग भागते है कोर्ट कचहरी से, भले ही उनके कानूनी अधिकारों का उल्लंघन हो लेकिन जब तक अत्यंत जरूरी नहीं होता तब तक तक वो न्यायपालिका की पास जाना नहीं चाहते जो न्यायपालिका की सबसे बड़ी हार हैं. ये सच हैं की न्यायपालिका की सामने मामले बढ़ रहे हैं लेकिन इसके कई अन्य कारण हैं न की लोगो का विस्वास बढ़ रहा हैं | लोग आश्वस्त हैं कि उन्हें सही समय पर न्याय नहीं मिलेगा। यह अपराधियों को भी समर्थन दे रहा है। वे सोचते हैं कि वर्तमान लाभ का आनंद लें और अदालत के डर को भूल जाएँ क्योंकि न्याय पाने में कई साल लगेंगे।

आम जनता के सामने आंतरिक समस्याओं तथा भ्रष्टाचार का उजागर होना | मीडिया के सक्रियता और लोगों के प्रति जागरूकता के कारण आंतरिक समस्याएं जनता के सामने हैं और इसके वजह से लोग समझते हैं कि यदि न्यायपालिका अपनी समस्या

का समाधान करने में असमर्थ है तो यह सार्वजनिक समस्याओं का समाधान कैसे करेगी ? ये न्यायपालिका पर घहराता हुआ सवाल हैं | ये समाज में यह सन्देश भी देता है कि इसके द्व्रारा दिया गया फैसला सर्वोपरि नहीं है और ऐसे बदला भी जा सकता है, और यह सन्देश लोगो की विश्वास कि परीक्षा लेता है | सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों द्वारा प्रेस कॉन्फ्रेंस इस दावे को जीवन रेखा प्रदान करता है कि न्यायपालिका में सबकुछ अच्छा नहीं है । यह सड़कों पर पारिवारिक मामलों को लड़ने जैसा था |

सरकार और न्यायपालिका के बीच संघर्ष नया नहीं है । यह न्यायपालिका के लिए पुरानी बीमारी है । पहले ये मन जाता था कि सरकार को सही करने का काम न्यायपालिका का है लेकिन पिछले कुछ फैसलों से ऐसा लगता है कि अब न्यायपालिका उतनी सक्षम नहीं रह गयी है । इतिहास में हमें ऐसे बहुत मामले मिलेंगे जब न्यायपालिका ने सरकार पर लगाम रखी है लेकिन अब जिस तरह से सरकार ने न्यायपालिका के एससी / एसटी अधिनियम पर दिए फैसले को पलटा है उस से यह सन्देश गया कि न्यायपालिका की हाथ से अब भी बहुत कुछ दूर है |अब लोग कानून के माध्यम से कुछ निर्णय बदलने के लिए तैयार हैं जो न्यायिक निर्णय की प्रामाणिकता को नष्ट कर रहा है ।

इन हालातों की साथ न्यायपालिका को अयोध्या के मामले के रूप में परीक्षा उत्तीर्ण करनी है । भारतीय न्यायपालिका अभी एक तरफ खाई और दूसरी तरफ कुवां कि स्तिथि में है । अगर यह किसी एक धर्म की पक्ष में फैसला सुनाता है तो दूसरे धर्म की लोग ऐसे भेदभाव की तरह देखेंगे और अगर ये दूसरे तरफ की पक्ष में जाता है तो विद्रोह का डर है । लोग कानून व्यवस्था को चुनौती दे सकते हैं । न्यायपालिका को यह समझना होगा कि भारत में धर्म का महत्व क्या है । न्यायपालिका को खुद पर किसी भी प्रकार की धार्मिक आरोपों से पड़े रखना होगा अन्यथा यह इसके पतन का एक बड़ा कारण होगा | पिछले कुछ दिनों में तीन तलाक, सबरीमाला मंदिर, दिवाली पर पटाखों की समय निर्धारण और कई मामलों के वजह से लोगों की अंदर उनकी संस्कृति और धर्म के खत्म होने का डर समा रहा जिसके कारण वो धर्मनिरपेक्ष न्यायपालिका पर संदेह कर रहें हैं |

यह सच है कि न्याय कि मूर्ति के आँख बंधे होते है जो यह सन्देश देते है कि निष्पक्ष न्याय होगा तथा अदालत किसी भी कारण से प्रभावित नहीं होगी लेकिन अब वक्त है कि न्याय कि मूर्ति के खुले कानों का सन्देश समझा जाय और समाज के हित में न्यायसंगत निर्णय लिया जाय |

उम्मीद है कि स्तिथि तथा समस्याओं का सावधानी से विश्लेषण कर हमारी महँ न्यायपालिका इस स्तिथि से सफलतापूर्वक बहार आएगी और लोगो के विश्वाश कि पहचान बनेंगी |

संदर्भ सूची

1. न्याय व्यवस्था में विश्वास खो रहे लोग: मलीमठ, पीटीआई | 9 फरवरी, 2002.
2. न्याय में देरी के कारण न्यायपालिका में विश्वास खो रहे लोग: सुमित्रा महाजन, पीटीआई | फ़रवरी 14, 2015.
3. न्यायिक प्रभाव आकलन: 'न्यायपालिका की संवैधानिक स्वतंत्रता का एक महत्वपूर्ण पहलू', ऐश्वर्या प्रताप सिंह 12 फरवरी 2018.